12

ISSN No. : 2395-4000

प्रयाग-पथ

रांगेय राघव

गीतकार शैलेन्द्र • गायक मुकेश

विशेष

प्रयाग-पथ

साहित्य, कला और संस्कृति का संचयन

वर्ष : 9, संयुक्तांक : 10-13, पूर्णांक : 12, (अक्टूबर : 2023)

ISSN : 2395-4000

सम्पादक

हितेश कुमार सिंह

सह सम्पादक

डॉ. नीतू सिंह

आवरण : **अजय जेटली**

शब्द संयोजन : **अनुनाद पब्लिकेशन, प्रयागराज**

मुद्रक : **ग्राफिक क्रियेशन्स प्रा. लि.,**
164/3/50 टैगोर टाउन, प्रयागराज-211002

मूल्य

इस अंक का : रु. 100.00

संस्थाओं के लिए : रु. 150.00

सदस्यता चार अंक : रु. 400.00 (डाक खर्च सहित)

आजीवन सदस्यता : रु. 5000.00 (पाँच हजार रुपये मात्र)

सम्पर्क

353/183/2, टैगोर टाउन, प्रयागराज-211002, उत्तर प्रदेश

मोबाइल : 09452790210

ई-मेल : prayagpathpatrika@gmail.com

- सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंधन पूर्णतः अवैतनिक/अव्यवसायिक
- पत्रिका में प्रकाशित विचार सम्बन्धित लेखकों के अपने हैं, सम्पादक और प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।
- स्वामी-सम्पादक-प्रकाशक-मुद्रक हितेश कुमार सिंह द्वारा 353/183/2, टैगोर टाउन, प्रयागराज के लिए ग्राफिक क्रियेशन्स प्रा. लि., 164/3/50 टैगोर टाउन, प्रयागराज-211002 से प्रकाशित और मुद्रित।

अनुक्रम

- **सम्पादक की ओर से...**
- **एकान्त श्रीवास्तव** की दस कविताएं 1
- मनुष्य विरोधी शक्तियों की शिनाख्त करती एकान्त की कविताएं - **अरुण होता** 11
- **लेख**

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दलित और बंगाल का नवजागरण - **जगदीश्वर चतुर्वेदी** 15
भक्ति आन्दोलन : मानुष जनम अनूप - **कमलानंद झा** 34

- **कहानियाँ**

चचा रमजान - **नीतू मुकुल** 48
अछूत - **प्रदीप कुमार सिंह** 57

- **शताब्दी - 1 : रांगेय राघव**

रिपोर्ताज : पुनर्रचना नहीं, बल्कि एक रचना - **शंभु गुप्त** 63
कबीर के जीवन की विवेकपरक प्रस्तुति - **हरियश राय** 102
अकाल के तूफान और विषाद के बीच प्रतिरोधी चेतना की तलाश - **मिथिलेश** 107
रांगेय राघव की कविता - **बसंत त्रिपाठी** 120
प्रेम में पड़ी स्त्री के मनोविज्ञान की पड़ताल करती कहानी - **स्मृति शुक्ल** 129
रांगेय राघव की इतिहास-दृष्टि - **विक्रमसिंह अमरावत** 136
व्यसनांधता व पारिवारिक विखण्डन को उजागर करती कहानी - **सविता सिंह** 141
रांगेय राघव की कहानियों में स्त्री मुक्ति के स्वर - **सविता एकांशी** 144

- **शताब्दी - 2 : गीतकार शैलेन्द्र**

कविता और व्यथा का संगम : शैलेन्द्र, रेणु और 'तीसरी कसम' - **विभा सिंह चौहान** 148
हम हैं वहीं हम थे जहां... - **महेन्द्र नाथ ओझा** 155
किसी के आंसुओं में मुस्कुराएंगे - **आर.के.एस. राठौर** 161

- **शताब्दी - 3 : गायक मुकेश**

आजाद भारत के बेखौफ ख्वाब का गायक मुकेश - **जनार्दन** 176
ऐसे थे गायक मुकेश - **शैलेन्द्र कपिल** 185

● **कविताएं**
मनीषा झा - 189/ब्रज श्रीवास्तव - 195/ 'निशान्त' - 202/असलम हसन - 208
राजेन्द्र शर्मा - 212/बजरंग सोनी - 216/मिलन 'बटोही' - 219
कैलाशनाथ खण्डेलवाल - 229

● **कोठार से (समीक्षा)**
प्राचीन भारतीय वेशभूषा - **डॉक्टर रांगेय राघव** 231

● **समीक्षाएं**
दोहों में गाँधी कथा - **प्रकाश कान्त** 234
शक्ति के बिखरे विद्युतकणों का समन्वय - **प्रकाश उदय** 237
छायावाद : जरूरी सवालों के साथ - **आशुतोष पार्थेश्वर** 245
सिनेमा के इतिहास और वर्तमान को समेटती एक अनुपम कृति - **पवन कुमार** 251
खिड़की खोलना बगावत ही सही - **धारवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी** 256
हिंदी आलोचना के इतिहास का आलोचनात्मक दस्तावेज़ - **लिली साह** 260
सघनतम संघर्ष में उत्कट जिजीविषा की कहानियाँ - **ज्ञानी देवी** 264
मीरां के काव्य की औपनिवेशिक पढ़त के विरुद्ध - **यवनिका तिवारी** 268
परतों में कैद औरतों की कहानी - **विनायक मिश्र** 273
हिमालय की सुरम्य गाथा - **हरेन्द्र कुमार पाण्डेय** 278
उज्ज्वल भविष्य की आस में पिता की आवाज़ - **चितरंजन कुमार** 282
पं. राधेश्याम कथावाचक पर जीवन्त लेखों का संग्रह - **विजय कुमार तिवारी** 287

सम्पादक की ओर से...

साहित्य *का मुख्य लक्ष्य मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने के पक्ष में संवेदित करना है। साहित्य मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ मनुष्य से मनुष्य के बीच समन्वय भी स्थापित करता है। यही समन्वय समाज में एक-दूसरे के प्रति शांति, सद्भाव और सहृदयता स्थापित करता है, भले ही वह किसी भी क्षेत्र, जाति, धर्म या लिंग का हो।*

कष्ट तो तब होता है जब साहित्यकार का दम भरने वाला ही समाज में समन्वय स्थापित करने के स्थान पर विग्रह पैदा करता है। यह विग्रह उसके द्वारा रचित साहित्य के ठीक विपरीत उसके आचरण में होता है। कम से कम साहित्यकार को अपनी रचनाओं में गढ़े गए व्यक्तित्व अथवा मान्यताओं के नजदीक होना चाहिए क्योंकि पाठक वर्ग जब उनकी रचनाओं का रसास्वादन करता है तो उसके मस्तिष्क में साहित्यकार के प्रति भी वही आदर्श स्थापित होता है, किन्तु यथार्थ में वे गुण या मान्यताएं साहित्यकार में न पाकर पाठक का मन विक्षोभ से भर जाता है। इसीलिए साहित्यकार को अपने साहित्य के अनुरूप मन, वचन और कर्म से समाज के प्रति समर्पित होना चाहिए। यह समर्पण ठीक एक दीपक की तरह होना चाहिए जो स्वयं जल कर दूसरों को आलोकित करता है।

साहित्यकार को किसी भी लाभ-हानि से परे रहकर साहित्य का सृजन करना चाहिए। यदि लाभ-हानि को देखकर साहित्य रचेगा तो वह व्यापार कर रहा है न कि साहित्य सेवा। अपने साहित्य में मानव-मूल्यों की दुहाई देने वाला साहित्यकार यदि किसी स्वार्थवश अपनी मूल्य-दृष्टि को ही दाँव पर लगा बैठता है तो वह अपने लेखकीय व्यक्तित्व के साथ छल करता है। यह अपराध संवैधानिक अपराध न होकर एक साहित्यिक अपराध है, क्योंकि हम लिखते कुछ और हैं व करते कुछ और हैं। यदि साहित्य समाज का दर्पण होता है तो साहित्यकार उस दर्पण का शीशा है और यदि शीशा टूटा हुआ हो तो उस पर किसी को भी अपना चेहरा साफ दिखाई नहीं देगा। साहित्यकार का काम मात्र कलम चलाना नहीं होता बल्कि उसे अपने लिखे हर शब्द को अपनी दायित्व-चेतना से प्रमाणित करना भी होता है। वह समाज के विकास में सक्रिय रूप से अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए लोगों को नैतिकता का बोध भी कराए, वह भी ऐसी नैतिकता जिसका कम से कम वह स्वयं

तो पालन करता हो। उसका यह नैतिक दायित्व है कि वह समाज का निर्माण मात्र अपनी लेखनी के बल पर न करके आचरण के द्वारा भी करे। एक ऐसा आचरण जो विश्व बंधुत्व, समानता और समाज में सद्भाव के साथ-साथ हाशिये पर जीवन जी रहे लोगों का भी खयाल रखे।

यह वर्ष रांगेय राघव, गीतकार शैलेन्द्र एवं गायक मुकेश की जन्मशती वर्ष है। रांगेय राघव ने सन् 1943 से 1969 तक मात्र 26 वर्षों में 180 ग्रंथ लिखकर कीर्तिमान बनाए। इतनी बड़ी मात्रा में लिखने के बावजूद वे उपेक्षित रहे। उन्हें हाशिये पर धकेल दिया गया और आज भी उन्हें और उनके साहित्य को बहुत कम याद किया जाता है। गीतकार शैलेन्द्र के गीतों में अन्याय के प्रतिकार की चेतना भी है तो मानवीय प्रेम भावना की भावपूर्ण स्वीकार्यता भी। अपने इन्हीं गीतों के कारण वह फर्श से अर्श तक चर्चित और स्थापित हैं। मात्र 10वीं कक्षा पास एक सफल गायक मुकेश को कौन नहीं जानता। वह एक अच्छे गायक के साथ-साथ एक अच्छे व्यक्ति भी रहे हैं। इन विभूतियों को याद करना ही उनके प्रति एक सच्ची श्रद्धाजंलि है। इनके अतिरिक्त कुछ और लोगों की भी जन्मशती रही है, उन पर फिर कभी बातचीत होगी।

आशा है पाठकों को यह अंक पसंद आयेगा। पाठकीय प्रतिक्रिया की भी प्रतीक्षा रहेगी।

सादर

हितेश कुमार सिंह

एकान्त श्रीवास्तव की दस कविताएं

गोंद इकट्ठा करने वाली बच्चियां

वे गोंद इकट्ठा करने वाली बच्चियां हैं
बबूल के तनों से बाहर
जो फूटता है प्रखर सूर्य के ताप से
टीकाटीक दोपहर में

चूसती हैं आम
हवा के झोंके से
जो टपक कर नीचे गिर पड़ते हैं
अधपकी इमलियों को
पत्थर मारकर गिराती हैं
उनकी घमौरियों भरी पीठ पर तकलीफें
पसीना बनकर चुनचुनाती हैं

निर्जन खेतों-पठारों में
कांटों से बचते हुए नंगे पांव
इकट्ठा करती हैं इतना गोंद
कि गांव की दुकान से

मिल जाए बदले में
गड़ा नमक, खड़ी मिर्च
और हल्दी की कुछ गांठें
इस तरह वे घर भर के भोजन के
स्वाद के लिए
बेचैन बच्चियां हैं
जो रोनी साग को नुनछुर और
चुप्पुर करती हैं
अपने कमाए हुए नमक, मिर्च और हल्दी से

जब असीसती हैं उनकी मांएं
तब ग्रीष्म के ये लंबे तपते दिन
उनके कमाए हुए सिक्कों की तरह
बज उठते हैं सुनसान में।

अनाज गोदाम के मार्ग से दाने चुनती स्त्रियां

जो गोदाम में है
वह उनके लिए नहीं

वे दाने नहीं, सुख चुनती हैं
दुख को
कंकड़ों की तरह फेंकती हैं दूर

वे भूख के जाल में फंसी हुईं
मछलियां हैं
बाहर आने का प्रयत्न करती हुईं

देखो, उनका जीवट कि वे जिंदा हैं
देखो, उनका धैर्य सुबह से शाम तक

देखो, एक-एक दाने चुनने का
उनका कौशल
जो तुम्हारी थाली में परोसा गया
वह उनके लिए नहीं

वे पक्षी नहीं हैं
पर पक्षियों की तरह टिका है उनका जीवन
गिरे हुए
और बचे हुए अन्न पर
तेज वाहनों के बीच
वे सड़क की एक तरफ से दूसरी तरफ
दौड़ती रहती हैं
सूपा और झाड़ू लिये
जो भोज का व्यंजन है
वह उनके लिए नहीं

फट गई हैं उनकी साड़ियां
लट गए हैं उनके बाल
बिवाइयों वाले उनके पांव में
चप्पलें नहीं हैं
कभी-कभी वे खांसती हैं बेदम
एक किनारे बैठ कर
सुस्ताती हैं कुछ देर
उनके बच्चे उनकी राह तकते हैं
एक जून का अनाज
आंचल में बांधकर वे लौटती हैं उछाह से
भूख के शत्रु को पछाड़ती हुईं

वे कल के बारे में कुछ नहीं बोलतीं
वे कल के बारे में कुछ नहीं सोचतीं
वे जीती हैं बस आज का जीवन
कल उगने वाला सूरज
उनके लिए नहीं।

कालाहांडी

कौन हो तुम इस टीकाटीक दोपहर में
कौन देश-धाम से आए
इस विपद बेला में यहां
कि घर में अनाज का एक दाना नहीं कहीं
लोटा भर जल
और गुड़ की भेली भी कठिन ओ पाहुने

नदी में एक बूंद जल नहीं कहीं
दिन है कि खाली खलिहान
कट-कट कर गिरते हैं रूख
यहां रोज चलती है भूख की आरी
यहां राख हो चुका है समय
कभी कोई चिट्ठी नहीं आती
बस बंबरी के सूखे फल
कभी-कभी बज उठते हैं सुनसान में

जहां तुम खड़े हो- वह जनपद है यह
उम्मीद पुरानी रोटी-सी भुरभुरा कर
जहां टूटने लगती है

कौन तोड़ता है सोने की थाली में
रोटी कालाहांडी की
कौन पीता है जल कालाहांडी का
चांदी के गिलास में
किसकी आदमखोर भूख मांगती है
लहू यहां के मानुष का

टीकाटीक दोपहर में
फूल नहीं, सपना मुरझाता है
कालाहांडी का